"नाथ साहित्य"

हिन्दी साहित्य के आदिकाल के प्रारम्भ में जिस प्रकार 'वज्रयान' से सिद्ध सम्प्रदाय का विकास हुआ, उसी प्रकार 'सहजयान' से नाथ सम्प्रदाय विकसित हुआ। नाथ सम्प्रदाय सिद्ध सम्प्रदाय के महासुखवाद के विरोध के रूप में मुखरित हुआ। अर्थात् सिद्ध सम्प्रदाय में जिस भोग की प्रधानता आ गई थी उसका तिरस्कार करते हुए नाथपंथियों ने संयम और त्याग की वृत्ति को अपनाया। इस प्रकार नाथ पंथ या सम्प्रदाय का मूल भी बौद्धों की 'सहजयान' शाखा है। नाथ सम्प्रदाय के प्रवर्तक गुरु मत्स्येन्द्रनाथ के शिष्य गोरखनाथ माने जाते हैं। योगियों की इस शाखा में अश्लीलता और नग्नता नहीं आई है। नाथ सम्प्रदाय में स्त्रियों का प्रवेश तो हुआ है लेकिन केवल परीक्षा के लिए। गोरखनाथ ने पतंजलि के उच्च लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति को लेकर हठयोग का प्रवर्तन किया। वज्रयानी सिद्धों का प्रभाव क्षेत्र पूर्वी भारत था जबकि नाथपंथियों ने अपने मत का प्रचार पश्चिमी भारत अर्थात् राजपूताना से पंजाब में किया। पंजाब में बालनाथ योगी का स्थान बहुत प्रसिद्ध रहा है, जिसका उल्लेख जायसी ने अपनी कृति 'पदमावत' में 'बालनाथ की टीला' के रूप में किया है। राहुल सांकृत्यायन ने नाथ पंथ को सिद्धों की परम्परा का ही विकसित रूप माना है। भगवान शिव के उपासक नाथों द्वारा जो साहित्य रचा गया, वही नाथ साहित्य के नाम से जाना गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि शैव सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला साहित्य भक्तिमार्ग के ज्ञानाश्रयी शाखा के अधिक निकट है। नाद

और बिन्दु शब्दों की व्याख्या से तथा परमात्मा की अनिर्वचनीयता की उक्ति से यह मत और स्पष्ट हो गया है।

गोरखनाथ के समय का ठीक-ठीक पता नहीं है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने नाथों का समय विक्रम की 10वीं शती माना है। नाथ पंथ की दार्शनिक सिद्धांत रूप से शैव मत के अन्तर्गत है और व्यावहारिकता की दृष्टि से हठयोग से संबंधित है। ईश्वर को ये 'शून्य' रूप में मानते हैं, जिसे वे 'अलख निरंजन' कहते हैं। नाथ पंथियों ने वैराग्य से मुक्ति सम्भव मानी है और यह वैराग्य गुरु की कृपा से मिलता है। इसलिए गुरु दीक्षा एवं गुरु मंत्र का नाथ सम्प्रदाय में विशेष महत्व है। नाथ पंथी इन्द्रिय निग्रह पर विशेष बल देते हैं तथा नारी से दूर रहने की शिक्षा देते हैं। मन की स्वाभाविक वृत्ति को बाह्य जगत से पलटकर अन्तर्जगत की ओर करना ही सबसे बड़ी साधना है। यह कार्य कुण्डलिनी योग द्वारा किया जा सकता है। नाथ साहित्य में कुण्डलिनी योग तथा उससे जुड़ी पारिभाषिक शब्दों — ब्रह्मरन्ध्र, षट्चक्र, अनहद नाद, इड़ा-पिंगला का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है।

नाथ पंथियों ने पाखण्ड एवं बाह्याडम्बरों का खुलकर विरोध किया तथा नीति, सदाचार, संयम, योग आदि पर बल देते हुए इन्हें मुक्ति के लिए आवश्यक माना। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथनानुसार, "इस मार्ग में कठोर ब्रह्मचर्य, वाक् संयम, शारीरिक शौच, मानसिक शुद्धता, ज्ञान के प्रति निष्ठा, बाह्य आडम्बरों के प्रति अनादर, आन्तरिक शुद्धि और मद्य-मांस आदि के पूर्ण बहिष्कार पर जोर दिया गया है।" नाथ पंथियों ने रूढ़ियों का खण्डन किया तथा समाज में

बाह्य धार्मिक विकृति एवं जातिवाद का खण्डन करते हुए उसे भारतीय मनोवृत्ति के अनुकूल बनाया। नाथ परम्परा में मत्स्येन्द्रनाथ के गुरु जलन्धरनाथ माने जाते हैं। नाथों की ९ संख्या भी मानी गई है जिनके नाम आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस प्रकार बताए हैं— ① मत्स्येन्द्रनाथ ② गाहिणीनाथ ③ ज्वालेन्द्रनाथ या जालन्धरनाथ ④ करिणिपानाथ ⑤ नागनाथ ⑥ चर्पटनाथ ⑦ रेवानाथ ⑧ भर्तृनाथ और ⑨ गोपीचन्द्रनाथ। इस सूची में गोरखनाथ का नाम न होने का कारण यह बताया जाता है कि गोरखपंथियों के अनुसार गोरखनाथ ही भिन्न-भिन्न समय में अलग-अलग नामों से अवतरित हुए हैं। गोरखनाथ के महत्व को रेखांकित करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं, "गोरखनाथ अपने युग के सबसे बड़े धर्मनेता थे। उनकी संगठन शक्ति अद्भुत थी। उनका व्यक्तित्व समर्थ धर्म गुरु का व्यक्तित्व था। उनका चरित्र स्फटिक के समान उज्ज्वल, बुद्धि भावावेश से एकदम अनाविल और कुशाग्र तीव्र थी।" गोरखनाथ की 40 रचनाएँ मानी जाती हैं, किन्तु डॉ० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल ने उनकी मात्र 14 रचनाएँ ही मानी हैं तथा उनका संकलन 'गोरखबानी' के नाम से प्रकाशित कराया है।

गोरखनाथ की रचनाओं का परवर्ती सन्त काव्य पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। कबीर के काव्य में उपलब्ध गुरु की महत्ता, नारी निन्दा, सदाचरण, इन्द्रिय निग्रह और उलटबाँसियों के विचित्र रूपक नाथ साहित्य के प्रभाव का बोध कराते हैं। कबीर द्वारा प्रयुक्त हठयोग की शब्दावली भी नाथ पंथ से ली गई है। डॉ० रामकुमार

वर्मा ने नाथ सम्प्रदाय के महत्व को प्रतिपादित करते हुए लिखा है, "गोरखनाथ ने नाथ सम्प्रदाय को जिस आन्दोलन का रूप दिया वह भारतीय मनोवृत्ति के सर्वथा अनुकूल सिद्ध हुआ है। इसमें जहाँ एक ओर ईश्वरवाद की निश्चित धारणा उपस्थित की गई है वहीं दूसरी ओर विकृत करने वाली समस्त परम्परागत रूढ़ियों पर आघात किया।" नाथ सम्प्रदाय ने परवर्ती सन्त साहित्य के लिए धार्मिक पृष्ठभूमि तैयार कर दी। सन्तों जिस आचरण शुद्धि की बात कही है उसका मूलाधार नाथ सम्प्रदाय ही है। नाथ सम्प्रदाय के सिद्धांत ग्रंथों में ईश्वर उपासना के बाह्य विधानों के प्रति उपेक्षा प्रकट करते हुए घट के भीतर ही ईश्वर को प्राप्त करने पर बल दिया गया तथा वेदशास्त्र के अध्ययन को व्यर्थ ठहराते हुए तीर्थाटन को निष्फल बताया गया और विद्वानों के प्रति अश्रद्धा प्रकट की गई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने नाथ पंथियों के सन्त साहित्य पर प्रभाव की विवेचना करते हुए लिखा है— "कबीर आदि सन्तों को नाथ पंथियों से जिस प्रकार 'साखी' और 'बानी' शब्द मिले उसी प्रकार 'साखी' और 'बानी' के लिए बहुत सामग्री और सधुक्कड़ी भाषा भी।"

वस्तुतः सारांश रूप में कहा जा सकता है कि नाथ सम्प्रदाय ने परवर्ती हिन्दी साहित्य को अनेक प्रकार से प्रभावित किया है।